International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

पुरुष व महिला छात्राध्यापकों के मूल्यों का अध्ययन

डॉ0 अजय कुमार यादव[1], डॉ0 राम प्रवेश यादव[2], अनुपमा दुबे[3]

[1]प्राचार्य, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र सिंगरामऊ, जौनपुर, इंडिया

[2]असि0 प्रोफेसर, शिक्षा संकाय, के0एम0 विश्वविद्यालय मथुरा, इंडिया

[3]प्रवक्ता, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय शिक्षक प्रशिक्षण केन्द्र सिंगरामऊ, जौनपुर, इंडिया

Corresponding Author Email: yadav31ajay07@Gmail.com

साराश–जब हम शिक्षा की बात करते है तो शिक्षा का तात्पर्य व्यक्ति को ऐसी शिक्षा से है जिससे व्यक्ति में सामाजिक शिक्षा, सांस्कृतिक शिक्षा एवं संवेगात्मक शिक्षा का विकास हो सकें। इन सभी बातों को ग्रहण करने हेतु व्यक्ति को एक शिक्षक की आवश्यकता पड़ती है जो छात्र को सर्वागीण विकास कर सके। यहां शिक्षक की बात आती है तो इसके विषय में हम प्राचीन में अपने पुराणों को देखते है जिससे स्पष्ट होता है कि शिक्षक का स्थान महत्वपूर्ण होता था तथा शिक्षक को गुरु की महता थी तथा छात्र का स्थान गौण था। परन्तु आज की शिक्षा बाल केन्द्रित शिक्षा पद्धति हो गई है। इसका तात्पर्य यह होता है शिक्षा में जितनी भी परिवर्तन क्यों न किया जाये परन्तु शिक्षा का मूलभूत उद्देश्य यथावत बना रहता है।

प्राचीन काल में शिक्षा के माध्यम से जहां व्यक्ति के चारित्रिक एवं व्यक्तित्व का विकास होता था तथा इसका नागरिक कर्त्तव्यों का बोध भी कराया जाता था। प्राचीन कालीन शिक्षा पद्धति यद्यपि में यह कह सकते है कि आधुनिक शिक्षा पद्धति का रूप बदला है परन्तु मूल्य और आदर्श नहीं बदलते है इस प्रकार शिक्षा एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा मानव के व्यवहारों व उनके व्यवहारों में परिवर्तन लाया जा सकता हैं।

मुख्य शब्दः– मूल्य, मध्यमान, मानक विचलन, मानक त्रुटि, CR मूल्य इत्यादि।

I. प्रस्तावना

भारतवर्ष एक कृषि प्रधान देश होने के साथ ही वर्तमान औद्योगिक प्रतिस्पर्धा का एक सशक्त देश भी है। यहाँ की भौगोलिक संरचना ही इसकी विभिन्न विविधताओं का मूल कारक है। यह भौगोलिक संरचना ही है जिसके परिणामस्वरुप इस देश के नागरिकों की जीवन शैली तथा सांस्कृतिक व सामाजिक स्वरुप भी अलग–अलग है। कहीं पर समतल मैदानी क्षेत्र तो कहीं पर पहाड़ी क्षेत्र है। जिसके कारण मानव अपने–अपने तरीके से जीवनयापन के अनुरुप विकल्पों का चयन करता है। मानव समुदाय परिवेश के अनुरुप सर्वोत्कृष्ट विकल्पों का उपयोग करता है और उन्हीं विकल्पों के परिवर्धन हेतु तत्पर रहता है। मानव समुदाय परिवेश के विकल्पों का उचित उपयोग करता हुआ, अपने जीवन स्तर में सुधार के लिए सदैव तत्पर रहता है। वह परिवेश में उपलब्ध संगत साधनों का बेहतर उपयोग करता है और अपनी अगली संतति के लिए उसके सदुपयोग को सुनिश्चित करने का प्रयास करता है। इन्हीं प्रयासों का प्रतिफल मानव के जीवन स्तर में सुधार के रूप में मिलता है। मानव जीवन, इन्ही संगत साधनों के आधार पर ही अपनी उत्कृष्टता पर पहुँचता है। मानव जीवन के लिए इन संगत साधनों की प्रचुरता व अल्पता ही विभाजक का कार्य करती है। और इस प्रकार मानव जीवन, ग्रामीण, शहरी, आदिवासीय आदि रुप ग्रहण करता है।

ईश्वर प्रदत्त कृतियों में मानव सर्वश्रेष्ठ कृति है। क्योंकि उसमें सोचने, समझने, तर्क करने, विवेक द्वारा निर्णय लेने की शक्ति होती है। इसी शक्ति के कारण वह अन्य प्राणियों से श्रेष्ठ है तथा संसार की अनुपम रचना है। इस शक्ति द्वारा वह अपने कार्यों को सम्पादित करने में बेहतर तरीकों का प्रयोग करता है जिससे उसके द्वारा किये गये कार्य उसके लिये उपयोगी तथा लाभदायक सिद्ध होते है यद्यपि एक ही शक्ति से सभी व्यक्तियों का निर्माण हुआ है। फिर भी सभी की कार्य करने की विधि एक जैसी नहीं होती है। उदाहरण स्वरुप–यदि एक व्यक्ति किसी कार्य में निपुण है तो दूसरा व्यक्ति उसी के कार्य को करनेमें कठिनाई अनुभव कर सकता है। इसका

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

कारण यह है कि व्यक्तियों में उनकी क्षमताओं चिन्तन तथा योग्यता का स्तर भिन्न–भिन्न होता है। चिन्तन की शुरुवात उस समय होती है जब व्यक्ति के सामने कोई ऐसी समस्या आती है। जिसका समाधान वह करना चाहता है।

I.I. अध्ययन के औचित्य

शैक्षिक प्रक्रिया के विकास तथा कुशल शिक्षकों के निर्माण में अध्यापक शिक्षा या शिक्षक शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। अध्यापक ऐसा होना चाहिए जिसे अपने विषय का पूर्ण ज्ञान हो समायोजनशीलता तथा सवेगात्मक परिपक्वता हो तथा वह सम्प्रेषण क्षमताओं में बहुत कुशल हो। एक शिक्षक के कर्त्तव्य और दायित्व उनमें अनेक बौद्धिक तथा मानसिक दक्षताओं की मांग करते हैं। अध्यापक शिक्षा का मुख्य उद्देश्य शिक्षकों की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यक मनोवैज्ञानिक तथ्यों से अवगत कराकर उनके कार्यों में सहायता प्रदान करना है जिससे वे शिक्षार्थियों को विकास के पथ पर निर्देशित कर सकें। शिक्षकों के कन्धों पर ही औपचारिक शिक्षा का पूरा भार होता है अतः उनके शैक्षिक और छात्रों से सम्बन्धित शैक्षिक समस्याओं के प्रति उचित मनोवृत्ति विकसित होनी चाहिए। यह तभी सम्भव है जब शिक्षक स्वयं समायोजन की प्रक्रिया से पूर्णतः अवगत हो, संवेगात्मक रुप से परिपक्व हो तथा समाज में प्रचलित और मान्य मूल्यों के प्रति पूर्णतः सजग हो। प्राचीन भारतीय शिक्षा में भी शिक्षक के यही गुण वर्णित है। ''प्राचीन भारतीयों का मत था कि अध्यापक को शान्त स्वभाव का होना चाहिए किसी भी छात्र का पक्षपात नहीं करना चाहिए। सर्वोपरि उसे अपने शास्त्र में पारंगत होना चाहिए या आजीवन उसे स्वाध्याय न छोड़ना चाहिए। किन्तु अध्यापक के लिए प्रकाण्ड पण्डित ही पर्याप्त न था। उसे वाक्चतुर, वक्ता, प्रत्युत्तमति, तार्किक, रोचक कथाओं का ज्ञाता तथा कठिन से कठिन पुस्तकों का तत्काल अर्थ कर देने वाला होना चाहिए।''[6]

आधुनिक शिक्षा में अध्यापक की भूमिका और भी जटिल तथा बहुआयामी हो गयी है, उसे शिक्षक प्रशिक्षण की सभी धाराओं–दर्शन, मनोविज्ञान, तकनीकी आदि का सैद्धान्तिक तथा व्यावहारिक ज्ञान होना चाहिए तथा उसे इनके प्रयोग में कुशल होना चाहिए।

विभिन्न विषयों के शिक्षण में विवाहित तथा अविवाहित छात्राध्यापकों की मनोवृत्ति में क्या अन्तर आता है, यह एक रोचक विषय रहा है। आमतौर पर यह माना जाता है कि विवाहोपरान्त व्यक्ति अधिक जिम्मेदार, व्यवहार कुशल तथा परिपक्व बनता है। इस दृष्टि से क्या विवाहित तथा अविवाहित अध्यापकों के शिक्षण व्यवहार में कोई स्पष्ट अन्तर परिलक्षित होता है? भारतीय पंरपरा में विवाह को वर्णित सोलह संस्कारों में स्थान दिया गया है। जिसके पश्चात् व्यक्ति गृहस्थआश्रम में प्रविष्ट होता है तथा वह अपने घरेलू तथा नागरिक, सामाजिक कर्त्तव्यों का पालन करने की ओर प्रवृत्त होता है। विभिन्न शिक्षण विषयों के सन्दर्भ में इस दृष्टि से उसमें कौन–कौन सी प्रमुख व्यवहारगत विशेषताएँ उत्पन्न होती है तथा उसके कक्षा–शिक्षण व्यवहार में अविवाहित अध्यापकों की तुलना में क्या सार्थक अन्तर उपस्थित है शोध के विषय के रुप में यह अध्यापन बहुत प्रासंगिक तथा समीयोज है।

I.II. साहित्यावलोकन

सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण से अनुसंधानकर्त्ता को अपने क्षेत्र के सीमानिर्धारण करने में सहायता मिलती है।, उसे अन्य व्यक्तियों द्वारा किये गये कार्य से पूर्ण परिचय हो जाता है तथा वह अपने शोध के उद्देश्यों को पूर्णरुपेण स्पष्ट व्यक्त कर सकता है। शोधार्थी पहले से ही सम्पन्न शोध कार्यों को दोहराने से बच सकता है तथा अपने अनुसंधान की योजना बनाने के लिए आवश्यक अर्न्तदृष्टि भी मिलती है।

सम्बन्धित साहित्य के मुख्य स्रोतों में लेखक अपने कार्य को सीधे ही पुस्तकों शोध विषयक लेखों, शोध पत्रो, अपने अनुसंधानकार्य आदि के माध्यम से प्रतिवेदित करता है । प्रत्येक शोध की संरचना शोध को वह ढाचा होती है जिस पर समस्त अनुसंधान आधारित होता है। सम्बन्धित साहित्य के सर्वेक्षण को पूर्व मान्यता यह है कि हर अनुसंधान कुछ पूर्व धारणाओ तथा पूर्व शोधों आदि से सम्बन्धित होता है । अतः पूर्व अनुसंधानो के सर्वेक्षण से हमें भावी अनुसंधान में सहायता मिलती है ।

प्रस्तुत शोध की समीक्षा शिक्षण के सन्दर्भ में सवेंगात्मक बुद्धि छात्रो के समायोजन तथा मूल्यों आदि विभिन्न पक्षों पर केन्द्रित है। इससे सम्बन्धित क्षेत्रों में विविध प्रकार के अनेकानेक अध्ययन हुए है। प्रस्तुत सर्वेक्षण इन्ही अध्ययनों का सारांश प्रस्तुत करता है । प्रस्तुत अध्ययन के लिए शोधकर्त्ता ने अनेक स्रोतों से सूचना एकत्र की है। जिसके आधार पर प्रस्तुत सम्बन्धित साहित्य की समीक्षा वर्णित है।

भोजक, विनोद (2015) ने अध्यापन व्यवसाय के प्रति महाविद्यालयी विद्यार्थियों की जागरुकता का अध्ययन किया तथा ग्रामीण और शहरी क्षेत्र में अध्यापकों में नियमों के प्रति जागरुकता का अध्ययन किया गया। शहरी तथा ग्रामीण लोगों की जागरुकता में समस्याओं के प्रति

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

सार्थक अन्तर पाया गया। ग्रामीण क्षेत्र के लोगों को समस्याओं का ज्ञान शहरी लोगों की अपेक्षा कम था। इस अध्ययन के निम्नलिखित उद्देश्य थे–

1. हरियाणा में माध्यमिक शिक्षा में अध्यापक शिक्षा का प्रशासनिक कार्य, शारीरिक अनुकूलता, नये कार्यक्रम, वित्तीय कार्य, मूल्यांकन और विकास की गतिविधियों के सन्दर्भ में अध्ययन करना।
2. 1986 की राष्ट्रीय शिक्षा नीति के अनुसार अध्यापक शिक्षा के गुणों का व्यावसायिक विकास की आवश्यकताओं के अनुसार राज्य के उच्च माध्यमिक शिक्षकों (सेवापूर्व तथा सेवारत्) का अध्ययन करना।

इस अध्ययन में पाया गया कि अधिकांश अध्यापक–शिक्षा पाठ्यक्रमों में प्रशिक्षण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण तथा संस्थाओं में उचित तथा आधुनिक प्रशिक्षण सुविधाओं का अभाव है।

निकहत थास्भीव शफीक, आलिया (2015) ने सरकारी तथा निजी माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक वातावरण के प्रभाव का अध्ययन किया। जिसमें बालक की शैक्षिक उपलब्धि पर बालक के पारिवारिक वातावरण की जाँच निजी तथा सरकारी छात्रों के प्रतिदर्श पर की गयी। जिसका परिणाम वातावरण के प्रति सकारात्मक रहा। खान, आयशा ने शैक्षणिक तनाव तथा उच्च विद्यालयों के छात्रों की आत्म–अवधारणा का अध्ययन किया। उन्होंने इसके लिए सरकारी तथा निजी विद्यालयों के छात्रो के बीच अन्तर की जाँच की। इसमें सामाजिक बौद्धिक, नौतिक, शैक्षिक तथा मनोरंजन आदि पक्षों पर आत्म–धारणा का प्रशिक्षण किया गया। अध्ययन में शैक्षिक तनाव तथा आत्म धारणा के प्रति नकारात्मक सम्बन्ध देखा गया। निजी विद्यालयों के छात्रों की नैतिक आत्म–अवधारणा तथा मनोरंजन आत्म–अवधारणा सरकारी विद्यालयों की अपेक्षा काफी उच्च है। निजी तथा सरकारी उच्च विद्यालय के छात्रों के विद्यालय में शैक्षिक तनाव प्रभावित कर रहा है।

बसु, सागर (2012) ने विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के समायोजन का अध्ययन किया। जिसके लिये समायोजन सूची का प्रयोग किया गया। अध्ययन में पाया गया कि विभिन्न माध्यमिक विद्यालयों के छात्रों के समायोजन के बीच महत्वपूर्ण अन्तर है।

द्विवेदी, हेमा (2013) ने कला और विज्ञान उच्चतर माध्यमिक शिक्षकों के शिक्षण व्यवसाय के प्रति उनके दृष्टिकोण की सामाजिक स्थिति का अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि शिक्षक की सामाजिक प्रतिष्ठा अभी भी समाज में उच्च है। इसके बावजूद शिक्षक अच्छी तरह कार्य नहीं कर रहें है। शिक्षकों की स्थिति में गिरावट है। समाज में नैतिक पतन के साथ शिक्षकों में भी व्यावसायिक दृष्टिकोण बढ़ा है। जिन शिक्षकों को ज्यादा वेतन नहीं मिलता है। वह समाज में अवमानना के साथ देखा जाता है।

अनीता गौर (2014) ने मध्यप्रदेश के ग्वालियर शहर के उच्च माध्यमिक विद्यालयों में उच्च और निम्न उपलब्धि हासिल करने वाले छात्रों की समायोजन समस्याओं का तुलनात्मक अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि व्यक्ति के संतुलित मानसिक विकास तथा सामाजिक जीवन हेतु उसका समायोजित व्यवहार आवश्यक है। समायोजन के अभाव में कई प्रकार की समस्याएँ उत्पन्न होती है। समायोजन की अवधारणा में मुख्यतः भौतिक पर्यावरण के प्रति अनुकूल के साथ सम्बन्ध था। एक अच्छी तरह से समायोजित बालक ही स्कूल के वातावरण का सकारात्मक रुप से आनन्द ले सकता है। एक निम्न स्तरीय विद्यालयी समायोजन के छात्र की उपलब्धि भी उससे प्रभावित होती है।

डॉ0 नजमा पीरजादा (2016) ने विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों के समायोजन का तुलनात्मक अध्ययन किया। समायोजन जीवन में सन्तुलन बनाने वाली प्रक्रिया है जिसके लिए जीवन को सामाजिक एवं वातावरणीय दोनों के साथ समायोजन करना है। इस अध्ययन में पाया गया कि विज्ञान तथा सामाजिक विज्ञान के शिक्षकों के समायोजन में कोई महत्वपूर्ण अन्तर नहीं है। तथा यह पारिवारिक संरचना से अधिक प्रभावित हो रही है।

सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण करने के पश्चात् उसे सुव्यवस्थित करने की आवश्यकता होती है। क्योंकि बिना सुव्यवस्थित किये उस साहित्य सर्वेक्षण का कोई महत्व नहीं होता है। और न ही उससे कोई लाभ प्राप्त होगा। अतः साहित्य को व्यवस्थित करना एक कला है। अतः हर सर्वेक्षण की एक स्पष्ट व्यवस्था होनी चाहिए। प्रत्येक सर्वेक्षण प्रकरण का ऐतिहासिक विकास देता है, एवं इसका हाल का स्तर एक साक्ष्य प्रस्तुत करते है तथा यह दिखलाते है कि किस प्रकार प्रस्तावित अध्ययन विचारणीय विषय है तथा किस प्रकार दूसरे पहलू

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

को समझने में सहायता करेगा यद्यपि कोई भी विषय सभी दृष्टिकोण से सर्वोत्तम नहीं होता है। सर्वेक्षण हमेशा चयनात्मक, सुव्यवस्थित तथा समस्या से स्पष्ट रुप से सम्बन्धित होना चाहिए।

अतः सम्बन्धित साहित्य का सर्वेक्षण किसी अनुसंधानकर्त्ता की वास्तविक योजना तथा उसके बाद कार्यान्वयन का एक महत्वपूर्ण पूर्वाक्षेपित वस्तु है। सम्बन्धित साहित्य पूर्व के अनुसंधान के लेखों का सारांश प्रस्तुत करता है। प्रभावशाली अनुसंधान अतीत के ज्ञान पर निर्भर होता है। यह पुनरावृत्ति को समाप्त करता है। अध्ययनों के उदाहरणों द्वारा जो काफी सहमति दर्शाते हैं तथा विपरीत निष्कर्ष भी होते है। यह अनुसंधान हेतु एक पृष्ठिभूमि प्रदान करता है। व्यवस्थिति सर्वेक्षण वर्तमान ज्ञान को तेज करने और समझ को परिभाषित करने में सहायता करता है। यह क्षेत्र में अध्ययनों के विषय में सूचना प्राप्त करने में सहायता करता है। अनावश्यक आवृत्ति से रक्षा करता है। अनुसंधान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में मार्गदर्शन करता है।

दिशा (2018);

''ने किशोरों के विराग का व्यक्तित्व, मूल्य, समायोजन, स्व–सम्मान, नियंत्रण केन्द्र और शैक्षिक निष्पत्ति के सन्दर्भ में अध्ययन किया जिसका निम्नलिखत उद्देश्य निर्धारित किया गया था–

1. विराग पर आयु और लिंग के प्रभाव का अध्ययन करना।
2. किशोरों के विराग और व्यक्तित्व, मूल्य, समायोजन, स्व–सम्मान, नियंत्रण केन्द्र तथा शैक्षिक निष्पत्ति के सहसम्बन्ध का अध्ययन करना।
3. विराग,व्यक्तित्व, मूल्य, समायोजन, स्व–सम्मान, नियंत्रण बिन्दु तथा शैक्षिक निष्पत्ति के सन्दर्भ में किशोर छात्रों और छात्राओं की तुलना करना।

400 विषयी के न्यादर्श को लिया जिसमें दो आयु वर्ग थे प्रत्येक आयु वर्ग 200 (100पुरुष 100 महिला) विषयी थे। डीन की विराग मापनी जनमत प्रश्नावली, आईजेंक व्यक्तित्व प्रश्नावली जिसका निम्न निष्कर्ष प्राप्त हुआ था कि–

1. उच्च व निम्न विराग वाले किशोरों के व्यक्तित्व के विमाओं, सौन्दर्यात्मक मूल्य परिवार, भावात्मक और पूर्ण समायोजन, स्व–सम्मान में सार्थक अन्तर पाया गया।
2. उच्च व निम्न विराग वाले किशोर छात्रों के न्यूरोटिसिज्म, लाई–स्केल, सौन्दर्यात्मक मूल्य, परिवार, भावात्मक और पूर्ण समायोजन तथा स्व–सम्मान में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. उच्च व निम्न विराग वाले किशोरों के न्यूरोटिसिज्म, सौन्दर्यात्मक मूल्य, पारिवारिक, समायोजन और स्व सम्मान में सार्थक अन्तर पाया गया।''

सिंह, मन्जुलता (2020);

''के अध्ययन के मुख्य उद्देश्य थे–

1. व्यक्तित्व मांगों के सन्दर्भ में मूल्य उन्मखीकरण का अध्ययन करना।
2. सामाजिक–आर्थिक स्थिति का व्यक्तित्व मॉगों के सन्दर्भ में संस्कृति का अध्ययन करना।
3. व्यक्तित्व मॉगों के सन्दर्भ में संस्कृति का अध्ययन करना।

अध्ययन का प्रतिदर्श 500 ईकाइयों का था। जिनका निम्नलिखित परिणाम प्राप्त हुआ था–

1. माँग–स्वीकृत, माँग अनुक्रम और माँग निष्पत्ति, ग्रामीण संस्कृति में अधिक पाये गए जो कि उनके मूल्य और सामाजिक–आर्थिक स्थिति से अलग थे। वे व्यक्ति जो उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति से थे, का माँग अनुक्रम, मूल्य व संस्कृति से अलग पाए गये।
2. ग्रामीण संस्कृति के व्यक्तियों की माँग स्वीकृत, निम्न सैद्धन्तिक, आर्थिक और सामाजिक मूल्यों के साथ उच्च कोटि की पाई गई।
3. ग्रामीण संस्कृति के व्यक्तियों जिनका आर्थिक मूल्य उच्च था। माँग परिवर्तन भी उच्च कोटि का पाया गया।

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

4. ग्रामीण संस्कृति के व्यक्तियों, जिनका धार्मिक मूल्य उच्च था माँग परिवर्तन भी उच्च कोटि की पायी गयी।
5. शहरी लागों, जिनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति निम्न थी, माँग परिवर्तन पायी गयी।
6. उच्च सामाजिक–आर्थिक स्थिति समूह के लोगों की माँग परिवर्तन स्वीकृत माँग निष्पत्ति और माँग अनुक्रम उच्च पाये गये।''

पद्मनाभत, पी0 (2021);

''ने निश्चित चरों के सन्दर्भ में हाईस्कूल के छात्रों के मूल्यों का अध्ययन किया जिसका निम्नलिखित उद्देश्य था–

1. कक्षा 9 में पढ़ने वाले छात्रों के मूल्य प्रारुप का अध्ययन करना।
2. सैद्धान्तिक, आर्थिक, राजनैतिक, सामाजिक, सौन्दर्यात्मक और धार्मिक मूल्यों के सन्दर्भ में छात्र–छात्राओं के सार्थक अन्तर को ज्ञात करना।
3. जाति और धर्म के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना।
4. अभिभावकों के सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के मूल्यों का अध्ययन करना।

दक्षिणी अर्काट जिले के माध्यमिक विद्यालयों में अध्ययनरत कक्षा 9 के 1000 विद्यार्थियों को यादृच्छिक न्यादर्श प्रतिख्यन प्रविधि से चुना गया जो कि पूरी जनसंख्या के 1.03 प्रतिशत थे। आलबोर्ट लिन्डजे के मूल्य अध्ययन के आधार पर शोधकर्त्ता ने एस0 बी0आई का निर्माण किया और शोधकर्त्ता ने व्यावसायिक पसन्द सूची को भी निर्मित किया और राजकुमार के स्व प्रत्यय अनुसूची को भी प्रयुक्त किया। जिसका परिणाम निम्न प्राप्त किया गया था–

1. कक्षा 9 में पढ़ने वाले विद्यार्थियों के मूल्य प्रारुप में लगभग समानता पाई गयी जबकि सामाजिक मूल्य और राजनैतिक मूल्य के प्राप्तांकों में अन्तर पाया गया।
2. छात्रों और छात्राओं के सैद्धान्तिक, आर्थिक, राजनैतिक और सौन्दर्यात्मक मूल्यों में सार्थक अन्तर पाया गया।
3. जाति और धर्म के सन्दर्भ में विद्यार्थियों के मूल्यों में अन्तर पाया गया।
4. अभिभावकों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति के सन्दर्भ में विद्यार्थियों द्वारा अधिक पसन्द किये गये मल्यों में अन्तर पाया गया।''

पाण्डेय, के0 (2021);

''ने प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन किया जिसका निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किया गया था–

1. प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन।
2. प्रतिभाशाली और औसत बालकों के मूल्यों के मध्य विभिन्न मूल्यों की असमानता खोजना।

जिसका परिणाम प्राप्त हुआ था कि– प्रतिभाशाली और औसत छात्रों क आर्दर्शात्मक धार्मिक मूल्यों में कोई विशेष अन्तर नहीं है।''

II. अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत अध्ययन में शोधकर्त्ता द्वारा अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि '' विवाहिता तथा अविवाहिता पुरुष तथा महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण विषय के आधार पर मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना। ''

III. शोध अध्ययन की परिकल्पना

उद्देश्य की पूर्ति हेतु शून्य परिकल्पना निर्मित की गई थी कि '' विवाहित तथा अविवाहित छात्राध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है। ''

IV. शोध विधि

प्रस्तुत अध्ययन विवरणात्मक प्रकार का अध्ययन है। जिसमें वर्तमान से सम्बन्धित घटनाओं का विशलेषणात्मक विवरण होता है इसकी सर्वेक्षण विधि के तहत आंकड़ों का संकलन करते हुए निरीक्षण किया जाता है। जिसमें आंकड़ों की सहायता से वर्तमान घटनाओं पर

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

प्रकाश डाला जाता है। सर्वेक्षण का इंगलिश रूपान्तर Survey दो शब्दों Sur+vey से मिलकर बना है। मूल रुप से, Sur (Sor) तथा very (veeir) पर आधारित है, जबकि Sor का अर्थ over तथा veeir का अर्थ to look होता है। इस प्रकार Survey का सम्मिलित मूल अर्थ 'ऊपर से देखना' अवलोकन अथवा अन्वेषण होता है। शब्द कोष के अनुसार भी सर्वेक्षण का अर्थ प्रायः सरकारी आलोचनात्मक निरीक्षण होता है, जिसका उद्देश्य एक क्षेत्र की किसी एक स्थिति अथवा उसके प्रचलन के सम्बन्ध में यथार्थ सूचना प्रदान करना होता है, जैसे स्कूलों का सर्वेक्षण।

IV.I. समष्टि

प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि समस्त बी0एड्0 प्रशिक्षण संस्थानाओं के छात्राध्यापक थे। समष्टि की विशेषतायें निम्नलिखित है। समष्टि परिमित तथा अपरिमित दो प्रकार की होती है। जिसमें प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि परिमित प्रकार की है क्योंकि छात्राध्यापक की संख्या सीमित होती है। प्रस्तुत अध्ययन की समष्टि समांगी प्रकार की है क्योंकि बी0एड्0 प्रशिक्षण संस्थानाओं के छात्राध्यापक का चयन की योग्यता का मानक एक ही होता है। किसी अध्ययन की वह सम्पूर्ण ईकाई समष्टि कहलाती है। जिस पर शोध कार्य आधारित होता है।

IV.II. प्रतिदर्श

प्रस्तुत अध्ययन के प्रतिदर्श का आकार 300 होगा। किसी बड़ी राशि में से चुनी हुई एक छाटी सी मात्रा को प्रतिदर्श या नमूना है। यह माना जाता है कि प्रतिदर्श के सांख्यिकीय गुण पूरी राशि के सांख्यिकीय गुणों का प्रतिनिधित्व करते है।

IV.III. न्यादर्श

शोधकर्त्ता द्वारा समय धन के अभाव के कारण आगमनात्मक प्रविधि अपनाते हुए समष्टि से एक छोटा समूह अध्ययन हेतु चयनित किया जाता है। जिसे न्यादर्श कहते है। न्यादर्श पूरी समष्टि का प्रतिनिधित्व करता है। प्रस्तुत अध्ययन में गाजीपुर जनपद के यादृच्छिक न्यादर्श प्रविधि द्वारा कुल तीन सौ छात्राध्यापकों का चयन किया गया था जिनके वितरण का आधार क्षेत्र, लिंग, विषय तथा वित्तपोषण था। अनुसंधान में प्रायः प्रचलित विधि का प्रयोग सम्भव नही होता, क्योंकि इस विधि के द्वारा अध्ययन धन, समय व सुविधा के दृष्टिकोण से सापेक्षिकतः अत्याधिक खर्चीला व जटिल होता है। इसके विपरीत, व्यावहारिक तथा सैद्धान्तिक दृष्टिकोण से अप्रसचलिक विधि द्वारा अध्ययन पर्याप्त मात्रा में सुगम, सरल, अल्प–व्ययी तथा शुद्ध रहता है। अप्राचलिक विधि के अध्ययन का आधार प्रतिदर्श होता है।

प्रतिदर्श एक समष्टि का वह अंश होता है जिसमें अपनी समष्टि की समस्त विशेषताओं का स्पष्ट प्रतिलम्ब रहता है। पी0 वी0 यंग के शब्दों में एक प्रतिदर्श अपने समस्त समूह का एक लघु–चित्र होता है।

यदि समष्टि का स्वरुप सजातीय रहता है, तब प्रतिदर्श के चयन में विशेष कठिनाई नहीं होतीं, परन्तु जब समष्टि का स्वरुप विषम जातीय रहता है, तब प्रतिदर्श की इकाईयों के चयन के लिए प्रतिचयन प्रक्रिया का उपयोग करना पड़ता है।

तालिका

न्यादर्श वितरण

क्र0सं0	संस्थायें	छात्राध्यापक की संख्या
1.	गुरु फूलचन्द्र महाविद्यालय सैदपुर गाजीपुर	40
2.	बी0एड्0 कालेज ककरही गाजीपुर	27
3.	समता महाविद्यालय सादात गाजीपुर	28
4.	कृष्ण सुदामा महाविद्यालय हुरुमुजपुर गाजीपुर	22
5.	पी00जी0 कालेज गाजीपुर	28

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877
Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208
DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

6.	मलिकपुरा कालेज गाजीपुर	26
7.	संत बुलादास कालेज गाजीपुर	34
8.	केदार फौजदार कालेज गाजीपुर	26
9.	गोपीनाथ महाविद्यालय देवकली गाजीपुर	39
10.	मॉ प्रेमा महाविद्यालय बासूचक गाजीपुर	30
योग		**300**

तालिका

वैवाहिक आधारित न्यादर्श वितरण

वर्ग	संख्या
वैवाहिक	150
अविवाहिक	150

तालिका

न्यादर्श का समग्र वितरण

वैवाहिक–150						अवैवाहिक–150					
पुरुष			महिला			पुरुष			महिला		
विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग	विज्ञान वर्ग	सामाजिक विषय	भाषा वर्ग
25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25	25
योग– 300											

V. शोध उपकरण

प्रस्तुत अध्ययन में आंकड़ों के संकलन हेतु निम्नलिखित शोध उपकरण प्रयुक्त किया गये थे–

V.I. मूल्य मापनी

यह उपकरण 1973 में शैरी और वर्मा द्वारा मानकीकृत किया गया जिसमें कुल 10 मूल्यों का मापन होता है। (धार्मिक, सामाजिक, जनतांकि, सौन्दर्यात्मक, आर्थिक, ज्ञान, आनन्दजीवी, शान्ति, पारिवारिक आदर्श आदि स्वास्थ्य) इस उपकरण में कुल 40 कथन है जिनमें

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

प्रत्येक कथन के तीन मूल्य है जिससे कुल मूल्यों की संख्या 120 हो जाता है। सभी मूल्यों का प्रत्ये कपेज पर मूल्य विवरण दिया गया है। यह प्रश्नों को परिशिष्ट में संलग्न है।

V.II. विश्वसनीयता

इस परीक्षणकी विश्वसनीयता सबसे पहले होयट विधि द्वारा ज्ञात किया जाता है बाद में परीक्षण पुनः परीक्षण विधिद्वारा ज्ञात किया जाता है।जिनके बीच अन्तराल 11 महीने का और दूसरी बार तीन महीने का रखा गया था। इस उदाहरण की विश्वसनीयता निम्नलिखित सारणी द्वारा व्यक्त होती है।

तालिका

P.V.Q. की विश्वसनीयता गुणांक

क्र.सं.	मूल्य	परीक्षा पुनर्परीक्षा समया.11 महीने N=48	विश्वनीयता गुणांक समयांतराल 3 महीने N=48	प्रसरण विश्लेषण विश्वनीयता गुणांक N=48	मानक त्रुटि
1.	धार्मिक	0.52	0.82	0.64	1.6
2.	सामाजिक	0.42	0.66	0.47	1.9
3.	जनतांत्रिक	0.62	0.57	0.48	2.9
4.	सौंदर्यात्मक	0.47	0.65	0.56	1.8
5.	आर्थिक	0.67	0.70	0.70	2.0
6.	ज्ञान	0.59	0.63	0.50	2.2
7.	आनन्दजीवी	0.61	0.54	0.63	2.0
8.	शक्ति	0.55	0.53	0.60	2.1
9.	पारिवारिक आदर्श	0.57	0.85	0.67	1.6
10.	स्वास्थ्य	0.53	0.64	0.52	2.2

V.III. वैधता

इस उपकरण की वैधता ज्ञात करने के लिये बी0ए0 भाग दो के 20 मनोविज्ञान के विद्यार्थियों का न्यादर्श लिया गया था। जिस पर उनके विचार और कुल दोनों लिये गये थे और दों के बीच सह–सम्बन्ध गुणांक 0.64 पाया गया जो सार्थकता स्तर के .05 स्तर पर 4.18 था अतः सार्थक था।

VI. उद्देश्य से सम्बन्धित विश्लेषण तथा व्याख्या

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

प्रस्तुत शोध में शोधकर्त्ता द्वारा उद्देश्य निर्धारित किया गया था कि ''विवाहित तथा अविवाहित पुरुष तथा महिला छात्राध्यापकों की शिक्षण विषय के आधार पर मूल्यों का तुलनात्मक अध्ययन करना।'' इस उद्देश्य के अध्ययन के लिये कुल छः शून्य परिकल्पनायें बनायी गयी जिनका परीक्षण क्रमशः निम्नलिखित है।

VII. परिकल्पना

प्रस्तुत अध्ययन के उद्देश्य हेतु परीक्षण के लिये शून्य परिकल्पना बनायी गयी थी कि– ''विवाहित तथा अविवहित छात्राध्यापकों के मूल्यों में सार्थक अन्तर नहीं है।'' इसके परीक्षण के लिये अधोलिखित विश्लेषण तालिका बनायी गयी–

तालिका

वैवाहिक आधारित मूल्यों से सम्बन्धी सी0आर0 मूल्य विश्लेषण तालिका–

समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	मानक त्रुटि	सी0आर0मूल्य	P
विवाहित	150	34.36	9.18	1.04	0.74	N.S. .05
अविवाहित	150	35.14	8.79			

df (298) at .05 = 1.96

उपरोक्त विश्लेषण तालिका से स्पष्ट है कि विवाहित छात्राध्यापकों के मूल्य के मध्यमान 34.36 और मानक विचलन 9.18 है जबकि अविवाहित छात्राध्यापकों के मध्यमान 35.14 और मानक विचलन 8.79 है जिससे अभिकलित मानकत्रुटि 1.04 तथा सी0आर0 मूल्य 0.74 है। जो df (298) के 0.05 सार्थकता स्तर पर 1.96 से कम है जिसके आधार पर बनायी गयी शून्य परिकल्पना ''विवाहित तथा अविवहित छात्राध्यापकों के मूल्य में सार्थक अन्तर नहीं है।'' स्वीकार हो जाती है और स्पष्ट होता है कि विवाहिता तथा अविवाहिता छात्राध्यापकों के मूल्य समान स्तर के होते है। जिसका सम्भवतः कारण एक तरह की परिस्थिति से सभी छात्राध्यापक आते हैं और उनके परिवार का रहन–सहन, समाज में स्थान, धार्मिक अनुष्ठान इत्यादि समान होता है।

VIII. शोध निष्कर्ष

विश्लेषणोपरान्त प्रस्तुत अध्ययन से यह शोध निष्कर्ष प्राप्त किया गया कि–

वैवाहिकता, लिंग व विषयगत् अर्न्तक्रिया मूल्यों के लिये सार्थक अन्तर में नहीं आती है।

IX. शैक्षिक निहितार्थ

प्रस्तुत अध्ययन भावी अध्यापकों को आधार मानकर किया गया हैं क्योंकि भारत को यदि हम स्त्री लिंग में भारत माता कहते है तो पुल्लिंग के रुप में जगत गुरु के नाम से भी जाना जाता है। अध्यापक का पेशा बड़े त्याग व कर्तव्य निष्ठता का होता है जिसके लिये आवश्यक हो जाता है कि शिक्षक–प्रशिक्षण विभाग विश्वविद्यालयों के सशक्त व समर्थ बनाये जाये जिससे भावी अध्यापकों को प्रशिक्षण दिया जाय तो उनमे भारतीय मूल्य (सामाजिक, धार्मिक, ज्ञान, पर्यावरणीय तथा एक दूसरे के प्रति लगाव और एकात्मकता भाव) स्थापित हो सकें। हमारा भावी अध्यापकों की आत्मा में भारतीयता भरी हो ताकि वे अपने भारतीय समाज को भली–भाँति समझ सके और पोषित करने वाले बने।

नई शिक्षा–नीति 2020 कहती है कि 'भारत का ज्ञान' में आधुनिक भारत और इसकी सफलताओं और चुनौतियों के प्रति प्राचीन भारत का ज्ञान और उसका योगदान शामिल होगा, और शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यावरण आदि के सम्बन्ध में भारत की भविष्य की आंकाक्षाओं की स्पष्ट भावना शामिल होगी इन तत्वों को पूरे स्कूल पाठ्यक्रम में जहाँ भी प्रासंगिक हो यहाँ वैज्ञानिक तरीके से और एक सटीक रुप से शामिल किया जायेगा। विशेष रुप से भारतीय ज्ञान प्रणाली को आदिवासी ज्ञान एवं सीखने के स्वदेशी और पारम्परिक तरीकों से कवर किया

International Journal of Science and Social Science Research
ISSN: 2583-7877 Peer Reviewed & Refereed Journal
Page No: 199-208 DOI: https://doi.org/10.63671/ijsssr.v4i1.605
Volume: 4 | Issue: 1
April-June 2026

जायेगा और गणित, खगोल विज्ञान, दर्शन, योग, वास्तुकला, चिकित्सा, कृषि अन्जीनियरिंग, भाषा विज्ञान साहित्य, खेल के साथ–साथ शासन, राजव्यवस्था संरक्षण आदि विषयों में शामिल किया जायेगा जनजातीय एथनो आषधीय परम्पराओं वन प्रबन्धन, पारम्परिक जैविक फसल की खेती, प्राकृतिक खेती आदि में विशिष्ट पाठ्यक्रम भी उपलब्ध कराये जायेगे। भारतीय ज्ञान प्रणालियों पर एक आकर्षक पाठ्यक्रम भी एक वैकल्पिक रुप में माध्यमिक विद्यालय में छात्रों के लिये उपलब्ध होगा।

सन्दर्भ ग्रन्थ सुची

1. **सिंह, शोभा (2009);** *''जनपद गोरखपुर के आवासीय माध्यमिक विद्यालयों के कक्षा सातवीं तथा आठवीं के छात्रों का जीवन–मूल्यों के प्रति दृष्टिकोण का अध्ययन''* लघु शोध प्रबन्ध, राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, जौनपुर सम्बद्ध पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर पृष्ठ–32.
2. **पाण्डेय सुमन (2010);** *''माध्यमिक स्तर के सनुसूचित जाति एवं पिछड़ी जाति के छात्रों की अभिरुचि, अभिप्रेरणा एवं मूल्यों का तूलनात्मक अध्ययन''* पी–एच0डी0 राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, जौनपुर सम्बद्ध पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर.
3. **शुक्ल कुमार अमन (2011);** *''ग्रामीण एवं शहरी परिवेश में उपलब्ध सुविधाओं के सन्दर्भ में किशोर विद्यार्थियों के मूल्यों, अध्ययन आदतों तथा शैक्षिक निष्पत्ति का अध्ययन''* पी–एच0डी0 राजा हरपाल सिंह महाविद्यालय, जौनपुर सम्बद्ध पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर.
4. **डॉ0 सुभाष चन्द्र अग्रवाल और ओम पाल सिंह चौहान (2012);** *''प्रशिक्षित अध्यापक का व्यक्तित्व, परिपक्वता और उसके मूल्यों से सहसम्बन्ध का अध्ययन''* एम0बी0 बुच, फोर्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन0सी0ई0 आर0टी0, नई दिल्ली, पृष्ठ–572.
5. **कुमारी टीना (2013);** *''नैतिक मूल्य परीक्षण निर्माण''* अप्रकाशित लघु शोध प्रबन्ध , बी0एच0यू0.
6. **कृपानी, मधु (2014);** *''एजूकेशन इन ह्यूमन वैल्यूज : कन्सेप्ट एण्ड प्रैक्टिकल इम्प्लीकेशन्स''* एम0बी0 बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ रिसर्च इन एजूकेशन, एन0सी0ई0 आर0टी0, नई दिल्ली, वाल्यूम II पृष्ठ–1340.
7. **कल्याणी, सी. (2016);** *''ए स्टडी ऑफ दि प्राब्लेम्स ऑफ दि एडोलेसन्स ऐण्ड देयर वैल्यूम सिस्टम''* एम0बी0 बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एन0सी0ई0आर0 टी0, नई दिल्ली, वाल्यूम II, पृष्ठ 1339–1340.
8. **दिशा (2018);** *''ए स्टडी ऑफ एडोलेसन्स एलीनेशन इन रिलेशन टू पर्सनालिटी, वैल्यूज, एडजस्टमेण्ड, सेल्फ स्टीम, लोकस ऑफ कन्ट्रोल एण्ड एकेडमिक''* एम0बी0 बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एन0सी0ई0आर0 टी0, नई दिल्ली, वाल्यूम II, पृष्ठ 1895–1896.
9. **सिंह, मन्जुलता (2020);** *''वैल्यू ओरियेण्टेशन, सोशियोएकोनामिक स्टेटस ऐण्ड कल्चर इन रिलेशन टू पर्सनालिटी नीड्स''* एम0बी0 बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एन0सी0ई0आर0 टी0, नई दिल्ली, वाल्यूम II, पृष्ठ 832.
10. **पद्मनाभत, पी0 (2021);** *''ए स्टडी ऑफ दि वैल्यूज ऑफ हाईस्कूल प्यूपिल्स इन रिलेशन टू सर्टेन सेलेक्टेड वैरियेबल''* एम0बी0 बुच, फिफ्थ सर्वे ऑफ एजूकेशनल रिसर्च इन एन0सी0ई0आर0 टी0, नई दिल्ली, वाल्यूम II, पृष्ठ 1342.
11. **पाण्डेय, के0 (2021);** *''ए स्टडी ऑफ एडोलेसन्स पर्सनालिटी वैल्यू एण्ड वेकेशनल इन्टरेस्ट ऑफ सुपर एण्ड नार्मल एडोलेशन''* अप्रकाशित शोध प्रबन्ध आगरा विश्वविद्यालय.